

॥ अथ ऐतरेयब्राह्मणपञ्चिकाप्रारंभः ॥

अथ ऐतरेयब्राह्मणपञ्चिका ।
 श्रीगणेशायनमः ॥ हरिः ३२ ॥ अद्वैतदेवानामव्यमुक्तिष्णः परम्भूतदेवरज्ञमयोऽप्यन्यांतवत्तांत्राज्ञा
 व्यष्ट्यव्यप्तेग्रामाग्निवेतिनीर्णाणीयमेकादशकपालं स्वांभृत्येतत्तेवत्ताम्भोनेतरायेमिनेपत्यस्त्रिवेत
 वांदेवतांविष्णुः सर्वादेवतांपत्तिव्यज्ञास्यांल्येतत्त्वांयद्भिस्थिविष्णुधेतद्यदामाविष्णुवैष्णोऽग्रामनिवेपत्त्वेत
 तपत्तेवानुभुवेतितदाहुर्येतेकादशकपालः तुरोत्ताशोऽग्रामाविष्णुकेलयोऽस्त्रकृमिः काविनर्नात्मि
 त्यदाकपालङ्गामेयोऽस्त्रायाः ॥ गायवर्तीगायवत्त्रमश्चर्देखिकपालं ज्ञविवर्त्तेन्द्रियपत्तुच्यक्त्यत्तेभन्यो
 मेष्ठकृतिः साविभक्तिं चंतिर्धेष्टयेऽप्तितित्वेभन्यो वसनप्रतितित्वेभन्यो नमतितित्वेभन्य
 छत्तेतत्तिर्धेष्टयेष्टेभन्यो वृद्धास्तेष्टमेष्टमिष्टुन्येभन्यो वसनप्रतितित्वेभन्यो नमतितित्वेभन्य
 पापशुभिर्यद्यवेदार्थपयज्ञः ॥ बादणष्टुभारतपद्येतेष्टमेष्टमिष्टुन्येभन्यो वसनप्रतितित्वेभन्यो नमतितित्वेभन्य
 पद्यांपौर्णेमासेभवांतमिष्टेवहृष्टिपत्तिमिष्टिर्धेष्टेभन्यो इकादीदायां भवत्तगमामिष्टेभन्यो नमतितित्वेभन्य
 मद्युप्यमत्रापत्तिर्धामामामाः पौर्णत्वेभन्यो वृद्धास्तेष्टमेष्टमिष्टुन्येभन्यो वसनप्रतितित्वेभन्यो नमतितित्वेभन्य

भारतीय वैदिक साहित्य-संस्कृत एक संकलन

ठ. भरत सिंह (साहित्यरत्न) नाशिक

आज का मानव विज्ञान की इस चकाचौंध में अपनी पुरानी वैदिक संस्कृति को भूलता जा रहा है। जिस संस्कृति में उसके दादा-पुरुषे पलते आये उसे ही तिलांजलि देना क्या श्रेष्ठ होगा? मानव की दिन-दिन गिरती हुई सभ्यता, आचार-विचार और वेदों-उपनिषदों के प्रति अरुचि आज उसके कर्तव्यों के प्रति दूर भागने की प्रेरणा बनती जा रही है। आज मानव पुनः अपने गरीबान और अपनी संस्कृति को झाँक कर देखे उसके विधानों पर अमल करे, जिससे जन-जन का, समुच्चे समाज का, उत्थान निहित है, बस इसी कामना को संजोए हुए वैदिक साहित्य एवं संस्कृति लेख को, वेदों में, उपनिषदों में, ग्रन्थों में, पुराणों में वर्णित, वैदिक साहित्य और संस्कृति को ज्यों का त्यों आपसब के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हमारे देश की वैदिक साहित्य एवं वैदिक संस्कृत का इतिहास बहुत पुराना है। भारत का प्राचीन साहित्य प्रायः संस्कृत भाषा में है। संस्कृत का विस्तार आर्यसंस्कृत के विस्तार से जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार ऋग्वेद प्राचीन संस्कृत भाषा को अपने आप में समाए हुए है उसी प्रकार प्राचीन संस्कृत के तत्त्व आदि ग्रंथ ऋग्वेद में सुरक्षित हैं। प्राचीन संस्कृत से ही विकसित होकर आधुनिक हिन्दी, मराठी, बंगाली, गुजराती आदि भाषाएँ अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुई हैं। भारतीय संस्कृत के काव्य ग्रंथ इस प्रकार हैं।

(क) वैदिक साहित्य

१) संहिता भाग - इस भाग में मंत्र-मंत्रों में प्रार्थना, स्तवन, आश्विर्दि तथा यज्ञादि विषय है। मंत्रों के समुदाय को ही संहिता कहते हैं। सुने जाने के कारण ही उन्हें श्रुति एवं

सूत्रबद्ध होने के कारण इन्हें सूक्त भी कहते हैं। ये ४ हैं-

- १) ऋग्वेद संहिता
- २) यजुर्वेद संहिता
- ३) सामवेद संहिता
- ४) अथर्ववेद संहिता

२) ब्राह्मण भाग - वैदिक ज्ञान का संग्रह ग्रंथ जिसमें यज्ञ सम्बन्धी विधान रितियाँ एवं यज्ञोत्सव विषय है, ब्राह्मण नामसे अभिधीत है। इन ब्राह्मण साहित्य ग्रंथों में संहिता मंत्रों की विस्तीर्ण व्याख्या है साथ इनके यज्ञ का विस्तार वर्णन भी मिलता है।

३) आरण्यक - आरण्यक साहित्य जन समाज से दूर बन प्रदेश में आचरित व पढ़े होने के कारण ही आरण्यक कहलाते हैं अतः यदि ब्राह्मण साहित्य यज्ञ करता गृहस्थों के लिए है तो आरण्यक वनप्रस्थियों के लिए।

४) उपनिषद - वैदिक वाइमय में उपनिषदों का महत्वपूर्ण योग है। उपनिषदों की संख्या लगभग २५० हैं किन्तु विद्वान प्रधान एवं प्राचीन रूप से ११ उपनिषदों को ही मानते हैं। ये हैं ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, तै-तरीय, ऐतरेय, छन्दोग्य, वृहद्वायक एवं श्वेताश्वतरोपनिषद ये गद्य और पद्य दोनों में हैं। पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर तो उपनिषदों को ज्ञान का उद्गम स्थान ही माना है।

५) सूत्र साहित्य - वेदों से सम्बन्धित सूत्र साहित्य भी है। इन्हें ही आचार संहिता की दृष्टि से "मन्त्रुअलस आन रिच्युअल" कहा जाता है। इनके कई भाग हैं जैसे-

(क) श्रौतसूत्र- इनसे हमें बड़े यज्ञों के नियम ज्ञात होते हैं।

(ख) गृहसूत्र- इनमें धार्मिक एवं आध्यात्मिक नियमों का प्राचीनतम रूप देखने को मिलता है। जिस प्रकार ब्राह्मण आरण्य उपनिषद ग्रंथों का चारों वेदों में से किसी न किसी से सम्बन्ध होता है वैसे ही सूत्र ग्रंथों का भी किसी न किसी से सम्बन्ध होता है।

वैदिक संस्कृति की विशेषताएँ

इस संस्कृत के बारे में कहा जाता है "सा प्रथमा संस्कृति विश्वधारा" अर्थात् यह संस्कृत विश्व-चिन्तन में प्रथम है। इस बारे में विन्टरनिटस के विचार हैं-

यदि हम अपनी संस्कृत के प्रारब्ध जानने को इच्छुक हैं, यदि हम सबसे पुरानी भारतीय संस्कृत को समझना चाहते हैं, तो हमें भारत की शरण लेनी होगी। जहाँ एक भारतीय जाति का सबसे पुराना साहित्य सुरक्षित है। कविन्द्र-रविन्द्र के उद्गार भी प्रायः ऐसे ही हैं -

प्रथम प्रभात उदय तव गगने।

प्रथम सामरव तव तपोवने।

वैदिक संस्कृति के तत्त्व चिन्तन इस प्रकार हैं-

आध्यात्मवाद मंत्र दृष्टा ऋषियों की यह मान्यता रही है की समस्त संसार प्राकृतिक शक्तियों के आधीन गतिशील हैं। प्राकृतिक नियमों में विकल्प या वैषम्य का नाम ऋत्र और मानव जीवन को प्रेरित करने वाले नैतिक मूल्यों का नाम सत्य है। मनुष्य का कल्याण प्राकृतिक नियमों को समझने और उनके अनुरूप चलने में ही है। "ऋत सत्य" की भावना ही आध्यात्मवाद का तत्त्व है। ईश उपनिषद में इस आध्यात्मवाद का सूत्र यही बताया गया है कि यह सम्पूर्ण जगत ईश्वर से व्याप्त है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिंत जगत्यां जगत्

तेन व्यक्तेन भुजीथाश पा गृथः कस्यस्विद्वन्म्

(यजुर्वेद ४०/१)

कर्मवाद वैदिक सिद्धान्त है कि जीवन कर्ममय अतः कर्म करते हुए ही जीवन व्यतीत हो-

कुर्वन्नेवेह कर्मणि जिजीविशेच्छ त समा

एवन्त्वयि नान्योऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे

(यजुर्वेद ४०/२)

भगवान श्रीकृष्ण ने भी कर्मयोग के सिद्धान्त को गीता में प्रतिपादित करते हुए संकेत दिया है कि निर्कर्मणता पाप एवं अभिशाप है। श्रम न करने से आयु क्षीण होती है।

आत्मविश्वास-यजुर्वेद ४०/३ में आत्मा का हनन करनेवाला पापी कहा गया है-

तांस्ते प्रेत्यभिगच्छन्ति ये के चात्महनों जना

(यजुर्वेद ४०/३)

आत्मविश्वास के बिना जीवन व्यर्थ है।

पुनर्जन्म की अवधारणा-वैदिक ऋषि पारलौकिक भावना को ही मानव की सदाचार कहने की प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं। जब मनुष्य सोचता है कि "अयमेव लोकः न परः अपि" तो वह सदाचार के लिए

प्रेरित होता है।

विश्वबन्धुत्व- वैदिक संस्कृत का मूल संदेश विश्वबन्धुत्व की भावना है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से तो जाति-धर्म की अवधारणा भी विफल हो जाती है।

भिन्नस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

अर्थात्, मैं मित्र की दृष्टी से प्राणिमात्र को देखूँ और मित्र की दृष्टी से देखा भी जाऊँ।

साम्यभाव की अवधारणा- वैदिक चिन्तन साम्यभाव की उदात्त भावना से परिपूर्ण है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरापयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भवेत्।

वैदिक संस्कृत का 'सुपथ' अनुराग भी यही कहता है-

असतो मा ज्योतिर्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्मा अमृतं गमयेति।

अर्थात् यह संस्कृत मनुष्य के सर्वांगीण विकाश पर बल देती है।

उसके जीवन यात्रा के लिए उसने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इस "पुरुषार्थ-

(शेष पृष्ठ ३६ पर)